हथेलियों पर चेक को फूलों की तरह बिठाया और उसे छू कर देखा। वह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। उन दिनों युववाणी के प्रोड्यूसर थे श्री महेंद्र मोदी, उनकी निगरानी में पहली बार यह चुनौती मैंने स्वीकार की थी। एक प्रोग्राम के लिए आकाशवाणी का कई-कई बार चक्कर लगाना पड़ता था, पर यह हमें कभी बोझ नहीं बल्कि सुखद लगता था। सोचते, चलो इसी बहाने आकाशवाणी जाने का मौका हमें मिल रहा है।

इलाहाबाद आकाशवाणी में किसान भाइयों के लिए कार्यक्रम करते थे श्री कैलाश गौतम। पहली बार उनसे मुलाकात आज भी ज़ेहन में ताज़ा है। उस रोज़ घर जाकर उनकी ढेर सारी कविताएं पढ़ी थीं। कुछ अपनी डायरी में नोट भी कीं। इतनी बेहतरीन कविताएं लिखने वाले कवि स्वभाव से एकदम सहज-सरल इंसान थे। आज भी जब उनकी कविताएं पढ़ती हूं तो उनका हंसमुख चेहरा, उनकी बातें, उनका मिलनसार व्यक्तित्व आंखों के सामने कौंध जाता है।

वो कड़की और बेहद संघर्ष के दिन थे। संगीत से बड़ा गहरा लगाव बचपन से ही था। नवीं से बारहवीं कक्षा तक शास्त्रीय गायन विषय के रूप में सीखा। ग्रेजुएशन के अन्य विषय और एम.ए. की पढ़ाई के दौरान संगीत पर विराम लग गया। तब मन उदासियों का बीहड़ जंगल बन गया था। मन की पुकार पर घरवालों को फरमान सुनाया कि अब मुझे विधिवत संगीत की तालीम लेनी है, तो मेरे बड़े भैया का तीव्र मध्यम स्वर गुंजायमान हुआ–'फीस के पैसे कहां से आएंगे'। इसका जवाब मेरी अथक मेहनत ने दिया। बच्चों को ट्यूशन पढ़ाई और उन्हीं दिनों आकाशवाणी से आकस्मिक उद्घोषकों की भर्ती हो रही थी। सो जुट पड़ी आवाज तराशने और बोलने के लिए रियाज और परिमार्जन में। कैसेट रिकॉर्डर वाला टू-इन-वन घर में था। उसी कैसेट रिकॉर्डर पर अपनी आवाज रिकॉर्ड करते, सुनते, उसे बार-बार रिवाइंड-फॉरवर्ड करके सुनते और सुधार करते। कभी-भी अपनी आवाज या अपनी उद्घोषणा परफेक्ट नहीं लगती थी। हर बार उसमें कोई न कोई कमी नजर आती।

बहरहाल... इम्तिहान दिया। आकस्मिक उद्घोषिका के रूप में चयन हो गया और फिर संगीत सीखने के लिए गुरुजी को शुल्क देने का इंतजाम भी हो गया। इलाहाबाद आकाशवाणी मेरे

> "विविध भारती.....रेडियो के मेरे जीवन की तिलिस्मी दुनिया। यह कभी सोचा नहीं था एक दिन रेडियो ही मेरे जीवन का मकसद बन इस कदर घुल मिल जाएगा कि वह मेरे अस्तित्व की पहचान बनेगा। इसी रेडियो के विविध भारती चैनल के जरिए सुर–साम्राज्ञी, सुर–सरिता लता मंगेशकर से बातचीत का मौका मिलेगा। वह गुलाबी नरम शाम थी, जब पहली बार फोन पर लता दीदी की आवाज सुनने का सौभाग्य मिला

बोलने, आवाज़ को तराशने और उद्घोषणाओं की पाठशाला थी। वहां हिंदी नाटक के लिए ऑडीशन पास करना टेढ़ी खीर था। तैयारी के दौरान न जाने कितने नाटकों का वाचिक अभिनय किया। पूरी-पूरी दोपहरी अभ्यास में गुजार देते। फिर नाटक का ऑडिशन हुआ और नाटक में पास हो गए। उसके बाद कुछ संस्कृत और हिंदी नाटकों में भाग लेने का मौका मिला। तब नाटक की रिकॉर्डिंग के लिए 2 दिन रिहर्सल होती थी। तीसरे दिन रिकॉर्डिंग होती थी। नाटक की वह रिकॉर्डिंग किसी उत्सव से कम नहीं लगती थी। पूरे-पूरे दिन बड़ी मशक्कत के बाद नाटक रिकॉर्ड किए जाते थे। और किसी के मुंह से उफ तक ना निकलती थी।

किशोरवय के उस पथरीले सफर में अचानक एक नया मोड़ आया और मेरी राहें इलाहाबाद की सड़कों से मुड़ कर महानगर यानी मुंबई के हाईवे से जुड़ गयीं। मेरे साथ थे मेरे भाई, मेरा हारमोनियम, छोटा-सा ट्रांजिस्टर और मेरा लेखन। ऊंची-ऊंची इमारतों के बीच अपना अदना-सा क़द.....। जी चाहता फौरन वापस लौट जाऊँ। कई बार बड़ी विकलता से इलाहाबाद शहर वापस भी लौटे, लेकिन मुकद्दर ने विविध भारती के साथ नाता जोड़ दिया फिर तो मन जैसे सपनों के आकाश में उड़ने वाला पंछी बन गया। विविध भारती.....रेडियो के मेरे जीवन की तिलिस्मी दुनिया। यह कभी सोचा नहीं था एक दिन रेडियो ही मेरे जीवन का मकसद बन इस कदर घुल मिल जाएगा कि वह मेरे अस्तित्व की पहचान बनेगा। इसी रेडियो के विविध भारती चैनल के जरिए सुर-साम्राज्ञी, सुर-सरिता लता मंगेशकर से बातचीत का मौका मिलेगा। वह गुलाबी नरम शाम थी, जब पहली बार फोन पर लता दीदी की आवाज सुनने का सौभाग्य मिला।

....दीदी मैं आपका इंटरव्यू लेना चाहती हूं

--आप क्या नया पूछेंगी, मुझसे सब कुछ तो पूछा जा चुका है। सब कुछ तो मैं इंटरव्यू में जमाने भर को बता चुकी हूं। .....मिश्री की डली-सी आवाज मेरे कानों में झंकृत हुई थी।

उनसे की गई यह चंद मिनटों की बात मेरे लिए सदी की बात बन गई.....बस थोड़े से मनुहार के बाद लता दीदी इंटरव्यू के लिए राजी हो गई। वह था उनसे पहला इंटरव्यू। उसके बाद उनसे कई बार बातचीत की, रिकॉर्डिंग का मौका मिला। रिकॉर्डिंग फोन पर हुई।